

मारवाड़ के राठौड़ राजवंश के ऐतिहासिक स्रोत

चुन्नी लाल राव

शोधार्थी, इतिहास विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

शोध सारांश

मारवाड़ क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान के मध्य पश्चिमी भाग में स्थित है। यहाँ की भूमि रेतीली और कठोर है, किंतु रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण थी। मारवाड़ के माध्यम से गुजरात, दिल्ली और मध्य भारत के बीच व्यापारिक मार्ग गुजरते थे। इस कारण यहाँ सत्ता स्थापित करना आर्थिक और सामरिक दृष्टि से लाभकारी था। मारवाड़ की जनता में भी वीरता और स्वतंत्रता की भावना प्रबल थी। राठौड़ों ने इस भावना को समझते हुए स्थानीय जनता को अपने साथ जोड़ा। उन्होंने भीलों और अन्य जनजातियों को भी प्रशासन में स्थान दिया। इस कारण धीरे-धीरे राठौड़ों के प्रति जनता का विश्वास और सहयोग बढ़ा।

राजस्थान के इतिहास में मारवाड़ का विशेष महत्व है। इस क्षेत्र का अधिकांश भाग राठौड़ राजवंश के शासन में रहा, जिसने सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से गहरा प्रभाव डाला। राठौड़ वंश की उत्पत्ति कन्नौज के राजपरिवार से मानी जाती है। कन्नौज पर मुसलमानों के आक्रमण के बाद राठौड़ों को अपना गढ़ छोड़ना पड़ा और उन्होंने राजस्थान की ओर पलायन किया। यही पलायन आगे चलकर मारवाड़ में राठौड़ वंश की स्थापना का आधार बना।

राठौड़ वंश के वास्तविक संस्थापक राव सीहा माने जाते हैं। राव सीहा ने 13वीं शताब्दी में पाली क्षेत्र में अपना आधार स्थापित किया और वहाँ से मारवाड़ के विभिन्न हिस्सों पर नियंत्रण करना शुरू किया। भीलों, स्थानीय चौहानों तथा अन्य राजपूत समूहों के साथ संघर्ष करते हुए उन्होंने पाली, मंडोर और आसपास के क्षेत्रों पर अधिकार किया। राव सीहा की वीरता, रणनीतिक दृष्टि और नेतृत्व क्षमता ने मारवाड़ में राठौड़ों के शासन की नींव रखी। राव सीहा के बाद उनके पुत्र और उत्तराधिकारी राव अस्तोजी ने शासन को और अधिक मजबूत किया। उन्होंने मंडोर को राजधानी के रूप में विकसित किया और प्रशासनिक ढाँचे को व्यवस्थित किया। धीरे-धीरे मारवाड़ का विस्तार होता गया और राठौड़ों ने न केवल राजनीतिक शक्ति हासिल की, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी क्षेत्र को समृद्ध बनाया।

प्रारंभिक राठौड़ शासकों ने कठोर परिस्थितियों में भी अपने शासन को स्थायी बनाने के लिए कई प्रकार के सुधार किए। उन्होंने भूमि व्यवस्था, कर संग्रह, सैनिक संगठन और किले निर्माण में विशेष योगदान दिया। मंडोर से लेकर आगे जोधपुर तक का विस्तार राठौड़ों के साहस और दूरदृष्टि का प्रतीक था। इन शासकों ने मारवाड़ की लोककला, स्थापत्य, साहित्य और धार्मिक परंपराओं को भी संरक्षण और प्रोत्साहन दिया। यही कारण है कि आज भी राठौड़ शासकों की विरासत राजस्थान के जनमानस में जीवित है। इस शोध पत्र का उद्देश्य राठौड़ वंश की स्थापना और प्रारंभिक शासकों की उपलब्धियों, संघर्षों और प्रशासनिक नीतियों को विस्तार से प्रस्तुत करना है। साथ ही, यह शोध इतिहास के उन पहलुओं को उजागर करता है, जो हमें तत्कालीन समाज की स्थिति और राजनैतिक दृष्टिकोण को समझने में मदद करते हैं। मारवाड़ के राठौड़ वंश की गाथा न केवल शौर्य और विजय की कहानी है, बल्कि यह एक अदम्य आत्मबल, धैर्य और सांस्कृतिक गौरव का भी प्रतीक है।

स्केताक्षर: - राठौड़ वंश की उत्पत्ति और मूल स्थान, मारवाड़ में राठौड़ों की स्थापना की प्रक्रिया, राठौड़ वंश के संस्थापक, प्रारंभिक शासन व्यवस्था और प्रशासनिक संरचना, प्रारंभिक राठौड़ शासकों की चुनौतियाँ।

प्रस्तावना

राजस्थान, जिसे वीरों की धरती और बहादुरी की प्रतीक भूमि कहा जाता है, अपने गौरवमयी इतिहास और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। इस प्रदेश की अनेक रियासतों में मारवाड़ का विशेष स्थान रहा है। रेगिस्तान की कठोर परिस्थितियों में भी जिस प्रकार इस क्षेत्र ने अपनी पहचान बनाई, वह अपने आप में अद्वितीय है। मारवाड़ के उत्थान और राजनीतिक-सामाजिक स्थिरता के पीछे राठौड़ राजवंश का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राठौड़ वंश की उत्पत्ति प्राचीन कान्यकुब्ज (कन्नौज) के राजघराने से मानी जाती है।

जब 12वीं शताब्दी में कन्नौज पर तुर्क आक्रमण हुए, तब राठौड़ वंश के लोग वहाँ से पलायन कर राजस्थान के मरुस्थलीय भागों में आए। इन्होंने परिस्थितियों में राठौड़ों ने मारवाड़ में अपने नए साम्राज्य की नींव रखी। इस नई भूमि पर टिकना और सत्ता स्थापित करना कोई सरल कार्य नहीं था। इसमें स्थानीय राजपूत राजाओं, भीलों और अन्य जातीय समूहों के साथ संघर्ष करना पड़ा। राठौड़ वंश के संस्थापक राव सीहा ने पाली क्षेत्र में अपने साम्राज्य की शुरुआत की। उन्होंने अपनी अदम्य वीरता, कुशल रणनीति और संगठन क्षमता के बल पर मारवाड़ में राठौड़ सत्ता की मजबूत नींव रखी। राव सीहा के नेतृत्व में राठौड़ों ने पाली, मंडोर और आसपास के क्षेत्रों पर अधिकार कर एक संगठित राजनीतिक इकाई का निर्माण किया। उनके पश्चात राव अस्तोजी और अन्य शासकों ने शासन को सुदृढ़ कर मारवाड़ को एक शक्तिशाली रियासत के रूप में विकसित किया।

प्रारंभिक राठौड़ शासकों का योगदान केवल राजनीतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। इन्होंने किलों, मंदिरों, तालाबों और महलों का निर्माण कर स्थापत्य कला को प्रोत्साहित किया। साथ ही, लोकगीत, लोकनृत्य और साहित्य के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राठौड़ राजवंश की यह कहानी पराक्रम, धैर्य और दूरदर्शिता की जीवंत मिसाल है, जो आज भी राजस्थान के इतिहास में स्वर्णक्षरों में अंकित है।

राठौड़ वंश की उत्पत्ति और मूल स्थान:- राजस्थान के इतिहास में राठौड़ वंश का एक विशिष्ट और गौरवशाली स्थान है। राठौड़ वंश का मूल स्थान उत्तर भारत में स्थित प्राचीन नगर कान्यकुब्ज, जिसे वर्तमान में कन्नौज कहा जाता है, माना जाता है। कन्नौज प्राचीन काल में हिंदुस्तान के प्रमुख सांस्कृतिक और राजनीतिक केंद्रों में से एक था। यह नगर गंगा के तट पर बसा हुआ था और यहां से अनेक शक्तिशाली राजवंशों ने शासन किया। राठौड़ वंश का संबंध कन्नौज के गौरवशाली गढ़वाल वंश से बताया जाता है। इस वंश की उत्पत्ति सूर्यवंशी राजाओं से जुड़ी मानी जाती है। अधिकांश राजस्थानी इतिहासकारों की धारणा है कि राठौड़ मूलतः कन्नौज के राजा जयचंद्र के वंशज थे। जयचंद्र गढ़वाल वंश के अंतिम शक्तिशाली राजा थे और उनका राज्य कन्नौज में स्थापित था। कन्नौज अपने समय में अत्यंत समृद्ध और संपन्न नगर था। यहाँ शिक्षा, कला, साहित्य और व्यापार खूब फले-फूले। राजसी ठाठ-बाठ, भव्य महल, विशाल किले और मंदिर कन्नौज की शान थे। यहाँ के शासकों ने अपने साम्राज्य को संगठित रूप में बढ़ाया और उसे शक्तिशाली राज्य के रूप में विकसित किया।

कन्नौज पर मुसलमानों के आक्रमण की पृष्ठभूमि:- 12वीं शताब्दी के अंतिम चरण में भारत में मुसलमान आक्रमणकारियों का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा था। दिल्ली पर कब्जा करने के बाद मुस्लिम शासकों ने उत्तर भारत के अन्य प्रमुख राज्यों पर भी अपना प्रभुत्व स्थापित करना प्रारंभ कर दिया। कन्नौज पर सबसे महत्वपूर्ण आक्रमण मोहम्मद गोरी और उसके सेनापतियों ने किया। यह आक्रमण 1193 ईस्वी में हुआ था, जब तराइन की दूसरी लड़ाई में पृथ्वीराज चौहान की पराजय के बाद मुस्लिम सेनाओं ने उत्तरी भारत में अपना प्रभाव तेजी से फैलाया। इस आक्रमण में कन्नौज के राजा जयचंद्र को हराया गया और कन्नौज को लूटा व ध्वस्त कर दिया गया। कन्नौज के ध्वंस के साथ ही यहाँ का सामाजिक और राजनीतिक ढांचा पूरी तरह से बिखर गया। राजघराने के अनेक सदस्य मारे गये और शेष को अपनी जान बचाने के लिए पलायन करना पड़ा। सीहा ने अपनी जान बचाने के लिए कन्नौज छोड़ दिया और पश्चिम की ओर पलायन करना शुरू किया।

राठौड़ों का पलायन और मारवाड़ की ओर प्रस्थान:- कन्नौज के पतन के बाद बचे हुए राठौड़ वंशजों के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी कृ अपनी वंश परंपरा को जीवित रखना और एक नया आधार क्षेत्र खोजना। इस कारण उन्होंने गंगा-यमुना के दोआब क्षेत्र से आगे सबसे पहले मध्य भारत और फिर राजस्थान की ओर प्रस्थान किया। राठौड़ों ने राजस्थान के मरुस्थलीय इलाके मारवाड़ को चुना, जो उस समय चौहानों, परिहारों, भीलों और अन्य छोटे-छोटे क्षत्रपों के नियंत्रण में था। इतिहासकार मानते हैं कि कन्नौज से पलायन करने के दौरान राठौड़ राजकुमारों और उनके अनुयायियों ने कठिन परिस्थितियों और लगातार हो रहे आक्रमणों का सामना किया। इस पूरे समय में राठौड़ों ने अपनी युद्ध क्षमता, संगठन शक्ति और साहस को जीवित रखा। मारवाड़, जिसे प्राचीन काल में मांडव्यपुर या मंडोर भी कहा जाता था, उस समय अपेक्षाकृत असंगठित और राजनीतिक दृष्टि से कमजोर था। यही कारण था कि राठौड़ों को यहाँ अपनी सत्ता स्थापित करने का अवसर मिला।

मारवाड़ में राठौड़ों का आगमन और प्रारंभिक संघर्ष:- राठौड़ों के नेतृत्व में राव सीहा को पहला महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। कन्नौज के विनाश के बाद राव सीहा पाली पहुंचे। पाली में उन्होंने व्यापारियों और स्थानीय लोगों के सहयोग से अपने लिए एक मजबूत ठिकाना बनाया। पाली उस समय स्थानीय भील सरदारों के नियंत्रण में था। राव सीहा ने इन्हें पराजित कर वहाँ सत्ता स्थापित की। पाली को आधार बनाकर राठौड़ों ने धीरे-धीरे आसपास के क्षेत्रों पर अधिकार करना शुरू किया। उन्होंने भीलों, चौहानों और परिहारों से लगातार संघर्ष किया। इस संघर्ष में राव सीहा की वीरता और उनके सैनिक संगठन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राव सीहा के उत्तराधिकारी राव अस्तोजी ने इस संघर्ष को आगे बढ़ाया और मंडोर पर अधिकार जमाया। मंडोर पर अधिकार करने के बाद राठौड़ शक्ति का केंद्रीकरण हुआ और उनकी स्थिति पहले से अधिक मजबूत हुई। इसके बाद मंडोर को ही मारवाड़ की राजधानी के रूप में विकसित किया गया।

मालदेव और चंद्रसेन जैसे राजाओं के पूर्व संघर्ष:- राव सीहा और अस्तोजी के बाद राठौड़ों की सत्ता को मजबूती देने में राव मालदेव और राव चंद्रसेन जैसे शासकों का योगदान भी उल्लेखनीय रहा। राव मालदेव (1532 - 1562 ई.) ने राठौड़ साम्राज्य को एक नई ऊँचाई दी। उन्होंने अफगान आक्रमणकारियों, गुजरात के सुल्तानों और मुगलों से संघर्ष किया और अपने क्षेत्र का काफी विस्तार किया। राव चंद्रसेन, जो मालदेव के पुत्र थे, उन्होंने मुगल सम्राट अकबर के विरुद्ध कड़ा प्रतिरोध किया। चंद्रसेन का संघर्ष इस बात

का प्रतीक है कि राठौड़ वंश ने किस प्रकार स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की रक्षा के लिए अपनी शक्ति का उपयोग किया। हालाँकि, चंद्रसेन को बाद में पराजय का सामना करना पड़ा, लेकिन उनका संघर्ष आज भी वीरता का प्रतीक माना जाता है।

मारवाड़ के राठौड़ राजवंश के ऐतिहासिक स्रोत और साक्ष्य राजस्थान का इतिहास अपनी वीरगाथाओं, स्थापत्य कला और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। इस इतिहास को जानने और समझने के लिए विभिन्न ऐतिहासिक स्रोत और साक्ष्य उपलब्ध हैं। मारवाड़ के राठौड़ राजवंश के संदर्भ में भी हमें कई प्रकार के भौतिक और साहित्यिक प्रमाण मिलते हैं, जो न केवल उनके शासन, बल्कि उनके समाज, संस्कृति, कला और प्रशासन के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं। इन स्रोतों को मुख्यतः तीन भागों में बांटा जा सकता है- शिलालेख और ताम्रपत्र, लोककथाएँ, प्राचीन ग्रंथ, विदेशी यात्रियों के विवरण, शिलालेख और ताम्रपत्र शिलालेख और ताम्रपत्र किसी भी राजवंश के इतिहास के सबसे प्रामाणिक भौतिक स्रोत माने जाते हैं। राठौड़ राजवंश के संदर्भ में भी कई महत्वपूर्ण शिलालेख और ताम्रपत्र मिले हैं। शिलालेख:- मारवाड़ में कई स्थानों पर शिलालेख पाए गए हैं, जिनमें मेहरानगढ़ किला, मंडोर, नागौर, ओसियां, और जालोर प्रमुख हैं। इन शिलालेखों में राजाओं की वंशावली, धार्मिक दान, युद्ध-विजयों और प्रशासनिक आदेशों का वर्णन मिलता है। उदाहरण के लिए, मंडोर में राव जोधा और राव मालदेव के शासन काल के शिलालेखों में किलों के निर्माण, मंदिरों के जीर्णोद्धार और जल संरचनाओं के निर्माण की जानकारी दी गई है। मेहरानगढ़ किले में स्थित शिलालेखों में राव मालदेव द्वारा गुजरात के सुल्तान के विरुद्ध की गई विजय का वर्णन मिलता है।

ताम्रपत्र:- ताम्रपत्रों का उपयोग मुख्यतः भूमि दान, करमुक्ति, और जागीर प्रदान करने के लिए किया जाता था। पाली, मंडोर, और नागौर में मिले ताम्रपत्रों से यह पता चलता है कि राठौड़ शासकों ने ब्राह्मणों, जैन मुनियों और अन्य धार्मिक संस्थाओं को भूमि दान दी थी। इससे न केवल धार्मिक संरक्षण की नीति का पता चलता है। ताम्रपत्रों में राजाओं की उपाधियों, राजकीय मुहरों और हस्ताक्षरों का विवरण भी मिलता है, जिससे शासन की वैधानिकता और उनकी शक्ति का प्रमाण मिलता है।

लोककथाएँ:- राजस्थान के इतिहास में लोककथाओं और मौखिक परंपराओं का विशेष महत्व रहा है। राठौड़ वंश के शौर्य और संघर्ष को जीवंत रखने में इनका बड़ा योगदान है। वीरगाथाएँ और चारण साहित्य:- राजपूत राजाओं के शौर्य की गाथाएँ चारणों और भाटों द्वारा रची और गाई जाती थीं। मारवाड़ में चारणों ने राठौड़ राजाओं की वीरता, दानवीरता और पराक्रम को लोककाव्यों और गीतों में अमर किया। उदाहरण के लिए, राव जोधा की मंडोर से जोधपुर में राजधानी स्थापित करने की गाथा, राव मालदेव की गुजरात और दिल्ली सुल्तान के विरुद्ध युद्ध की कहानियाँ, और राव चंद्रसेन के अकबर से संघर्ष की कथाएँ आज भी लोकगीतों में सुनाई देती हैं।

लोककथाएँ:- मारवाड़ में पधारो म्हारे देश जैसी प्रसिद्ध कहावतें और गीत राठौड़ शासन की संस्कृति और अतिथि सत्कार की भावना को दर्शाते हैं। भीलों और अन्य जनजातियों के साथ संघर्ष और सहयोग की कहानियाँ, राठौड़ राजकुमारों की वीर मृत्यु और बलिदान की कथाएँ जनमानस में गहरे बसे हुए हैं। लोककथाओं ने उन घटनाओं को जीवित रखा है, जिनका प्रामाणिक ऐतिहासिक स्रोत नहीं मिलता। इसी कारण ये मौखिक इतिहास के अध्ययन में बहुमूल्य सहायक होती हैं।

प्राचीन ग्रंथ और इतिहासकारों के वर्णन:- राठौड़ वंश के इतिहास के अध्ययन में कई प्राचीन ग्रंथ और स्थानीय इतिहासकारों द्वारा रचित कृतियाँ महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में सामने आती हैं। नैनसी री ख्यात:- नैनसी री ख्यात मारवाड़ के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है। इसे नैनसी (17वीं शताब्दी) ने लिखा था। नैनसी राव जसवंत सिंह के दरबार में दीवान और प्रमुख प्रशासक थे। इस ग्रंथ में मारवाड़ के राठौड़ राजाओं की वंशावली, युद्धों, प्रशासनिक नीतियों, धार्मिक कार्यों और सांस्कृतिक गतिविधियों का अत्यंत विस्तृत विवरण रण मिलता है। नैनसी ने लोककथाओं और मौखिक परंपराओं को भी अपनी ख्यात में स्थान दिया, जिससे इस ग्रंथ की ऐतिहासिक प्रामाणिकता और भी बढ़ जाती है।

मुंहताओं की बातें:- मुंहताओं की बातें नामक ग्रंथ भी महत्वपूर्ण स्रोत है, जिसमें मारवाड़ के शासकों के जीवन से जुड़ी घटनाओं और राजनयिक गतिविधियों का उल्लेख मिलता है।

अन्य ख्यात और पुट्टी:- राजस्थान में अन्य ख्यातें, जैसे मेवाड़ की ख्यात, डिंगल साहित्य और विभिन्न पुट्टियाँ (वंशावली लेख) भी राठौड़ों के इतिहास की जानकारी देती हैं। इनमें वंशजों की सूची, किलों का निर्माण, दान, धार्मिक कार्य और युद्धों का वर्णन मिलता है। विदेशी यात्रियों के विवरण:- राठौड़ शासनकाल के दौरान कई विदेशी यात्री भारत आए, जिन्होंने राजस्थान और मारवाड़ के बारे में अपने यात्रा वृत्तांतों में लिखा।

फ्रांसीसी और पुर्तगाली यात्री:- 17वीं और 18वीं शताब्दी में फ्रांसीसी और पुर्तगाली व्यापारियों ने मारवाड़ के व्यापारिक मार्गों, व्यापारिक वस्तुओं और राजनीतिक स्थिति का वर्णन किया। इन यात्रियों ने लिखा कि मारवाड़ के शासक व्यापारिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करते थे।

मुगल इतिहासकारों के लेख:- हालाँकि ये पूरी तरह विदेशी नहीं माने जाते, परंतु मुगलों के दरबारी इतिहासकारों जैसे अबुल फजल (आइन-अकबरी) ने मारवाड़ और राठौड़ शासकों का उल्लेख किया। अबुल फजल ने मारवाड़ के किलों, शासकों के साहस,

स्थानीय राजस्व व्यवस्था और सैन्य शक्ति का विस्तृत विवरण दिया। उन्होंने राव चंद्रसेन के अकबर के विरुद्ध संघर्ष और मेहरानगढ़ किले की मजबूती की प्रशंसा भी की।

अंग्रेजी यात्री और कंपनी के रिकॉर्ड:- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के समय में अंग्रेज अधिकारियों और यात्रियों ने भी मारवाड़ का दौरा किया। उनके यात्रा वृत्तों में जोधपुर दरबार, जागीर व्यवस्था, कर संग्रह, किसानों की स्थिति, कारीगरों और व्यापारियों की भूमिका का उल्लेख मिलता है।

अन्य सहायक स्रोत चित्र, मुहर और सिक्के:- राठौड़ शासकों द्वारा जारी किए गए सिक्कों और मुहरों से शासन की आर्थिक स्थिति और उनके राजनीतिक दायरे का अंदाजा मिलता है। कई राजाओं ने अपने नाम और उपाधियों के साथ सिक्के जारी किए। इनमें उनकी धार्मिक आस्थाओं, देवताओं के प्रतीक चिह्न और स्थानीय प्रतीकों का प्रयोग किया गया। स्थापत्य और पुरातात्विक अवशेष:- मारवाड़ के राठौड़ राजवंश का इतिहास न केवल वीरता और संघर्ष की कहानी है, बल्कि यह सांस्कृतिक समृद्धि, सामाजिक संगठन और प्रशासनिक कुशलता का परिचायक भी है।

इस वंश के इतिहास को समझने में शिलालेख और ताम्रपत्र, लोककथाएँ, प्राचीन ग्रंथ, तथा विदेशी यात्रियों के विवरण अमूल्य स्रोत हैं। शिलालेख और ताम्रपत्र जहाँ भौतिक साक्ष्य के रूप में शासन की वास्तविकताओं को सामने लाते हैं, वहीं लोककथाएँ और ख्यात राजाओं की लोकप्रियता और समाज में उनकी छवि को प्रकट करती हैं। विदेशी यात्रियों के वर्णन हमें बाहरी दृष्टिकोण से राठौड़ शासन के प्रभाव और मारवाड़ की महत्ता का मूल्यांकन करने में सहायक होते हैं। इन सब स्रोतों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि राठौड़ राजवंश ने न केवल मारवाड़ में एक मजबूत राजनीतिक सत्ता स्थापित की, बल्कि संस्कृति, कला और साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस प्रकार, इन स्रोतों और साक्ष्यों का अध्ययन हमें राठौड़ वंश के यथार्थ और उसकी ऐतिहासिक महत्ता को गहराई से समझने में मदद करता है।

निष्कर्ष:- मारवाड़ के राठौड़ राजवंश का इतिहास राजस्थान के गौरवशाली अतीत और वीर परंपराओं का जीवंत प्रतीक है। इस वंश की स्थापना और उसके प्रारंभिक शासकों का योगदान न केवल एक शक्तिशाली राजनीतिक सत्ता के रूप में देखा जाता है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से भी इसे अद्वितीय माना जाता है। राठौड़ों की उत्पत्ति कन्नौज के गढवाल वंश से जुड़ी है। जब कन्नौज पर मुस्लिम आक्रमण हुआ, तब जयचंद्र के वंशज राठौड़ों ने राजस्थान की ओर पलायन किया और अंततः मारवाड़ की धरती पर अपनी सत्ता स्थापित की। इस प्रक्रिया में उन्हें स्थानीय जनजातियों, चौहानों, परिहारों और अन्य राजपूत सरदारों से लम्बे संघर्ष करने पड़े। राव सीहा को राठौड़ राजवंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उन्होंने पाली को अपना पहला ठिकाना बनाया और वहाँ से मंडोर तथा अन्य क्षेत्रों की ओर बढ़े।

अस्तोजी ने अपने पिता की नीतियों को आगे बढ़ाया और मंडोर पर अधिकार कर मारवाड़ में राठौड़ों की स्थिति को मजबूत किया। इन शासकों ने पाली से लेकर मंडोर और फिर जोधपुर तक धीरे-धीरे अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

इन प्रारंभिक शासकों ने न केवल सैन्य दृष्टि से शक्ति अर्जित की, बल्कि प्रशासनिक और सामाजिक व्यवस्थाओं को भी सुव्यवस्थित किया। भूमि व्यवस्था, कर और जागीर प्रथा के माध्यम से उन्होंने राज्य को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मारवाड़ का इतिहास:- डॉ. गिरीराज शरण अग्रवाल
2. नैनसी री ख्यात:- नैनसी (संपादक: मंघराय वर्मा, दयालदास भण्डारी)
3. राठौड़ों का इतिहास:- प्रो. गौरीशंकर हीराचंद ओझा
4. राजस्थान की रियासतें:- प्रो. कैलाशचंद्र भारती
5. ए हिस्ट्री ऑफ राजस्थान:- रमेश चंद्र मजूमदार
6. मारवाड़ का राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास:- डॉ. नारायण सिंह भाटी
7. राजस्थान की ख्यातें:- डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा
8. द राठौड़स ऑफ मारवाड़:- रीना मेहता
9. राजस्थान का इतिहास:- जदुनाथ सरकार
10. राजस्थान के राजवंश:- कर्नल जेम्स टॉड कृ. त्रिपाठी दसरू ।ददसे ंदक ।दजपुनपजपमे व ित्रंेजीद
11. मारवाड़: ऐन एनालिटिकल हिस्ट्री:- शिव सिंह सारण
12. जोधपुर राज्य का इतिहास:- लक्ष्मण सिंह मंडावा
13. मारवाड़ के ऐतिहासिक स्थल और स्मारक:- डॉ. महैन्द्र सिंह राठौड़
14. राठौड़ वंश का इतिहास:- के. एन. दत्त
15. राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास:- डॉ. हरीशंकर शर्मा